कक्षा–12 NCERT राजनीति विज्ञान (स्वतंत्र भारत में राजनीति)

अध्याय–05 (कांग्रेस प्रणाली – चुनौतियां और पुनर्स्थापना) नोट्स

Youtube Channel Name : Siddhi Vinayak Sangaria

Channel Link- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

Telegram link - https://t.me/siddhivinayaksangariamukesh (Siddhi Vinayak Sangaria)

Political Science Video Playlist Link-

https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU

प्रश्न 1. 1967 के चुनावों के बारे में निम्नलिखित में कौन–कौन से बयान सही हैं?

(अ) कांग्रेस लोकसभा के चुनाव में विजयी रही, लेकिन कई राज्यों में विधानसभा के चुनाव वह हार गई।

(ब) कांग्रेस लोकसभा के चुनाव भी हारी और विधानसभा के भी।

(स) कांग्रेस को लोकसभा में बहुमत नहीं मिला, लेकिन उसने दूसरी पार्टियों के समर्थन से एक गठबंधन सरकार बनाई।

(द) कांग्रेस केंद्र में सत्तासीन रही और उसका बहुमत भी बढ़ा।

प्रश्न 2. निम्नलिखित का मेल करें–

(अ) सिंडिकेट	–	(1) कोई निर्वाचित जन–प्रतिनिधि जिस पार्टी के टिकट से जीता हो, उस पार्टी को छोड़कर अगर दूसरे दल में चला जाए।
(ब) दल–बदल	–	(2) लोगों का ध्यान आकर्षित करने वाला एक मनभावन मुहावरा।
(स) नारा	–	(3) कांग्रेस और इसकी नीतियों के खिलाफ अलग–अलग विचारधाराओं की पार्टियों का एकजुट होना।
(द) गैर–कांग्रेसवाद	–	(4) कांग्रेस के भीतर ताकतवर और प्रभावशाली नेताओं का एक समूह।

उत्तर– (अ) – (4)
(ब) – (1)
(स) – (2)
(द) – (3)

प्रश्न 3. निम्नलिखित नारे से किन नेताओं का सम्बन्ध है–

(अ) जय जवान, जय किसान (ब) इंदिरा हटाओ (स) गरीबी हटाओ।

उत्तर– (अ) लाल बहादुर शास्त्री
(ब) विपक्षी गठबंधन
(स) श्रीमती इंदिरा गांधी

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

प्रश्न 4. 1971 के 'ग्रैंड अलायंस' के बारे में कौन–सा कथन ठीक है?

(अ) इसका गठन गैर–कम्युनिस्ट और गैर–कांग्रेसी दलों ने किया था।

(ब) इसके पास एक स्पष्ट राजनीतिक तथा विचारधारात्मक कार्यक्रम था।

(स) इसका गठन सभी गैर–कांग्रेसी दलों ने एकजुट होकर किया था।

प्रश्न 5. किसी राजनीतिक दल को अपने अंदरूनी मतभेदों का समाधान किस तरह करना चाहिए ? यहाँ कुछ समाय दिए गए हैं। प्रत्येक पर विचार कीजिए और उसके सामने उसके फायदों और घाटों को लिखिए।

(अ) पार्टी के अध्यक्ष द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना।

(ब) पार्टी के भीतर बहुमत की राय पर अमल करना।

(स) हरेक मामले पर गुप्त मतदान कराना।

(द) पार्टी के वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं से सलाह करना।

उत्तर–

(अ) पार्टी के अध्यक्ष द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना।

फायदा– पार्टी के भीतर अनुशासन बढ़ेगा।

घाटा– पार्टी में अध्यक्ष अथवा बड़े स्तर के नेताओं की दादागिरी बढ़ेगी तथा दल में आंतरिक लोकतंत्र कमजोर हो।

(ब) पार्टी के भीतर बहुमत की राय पर अमल करना।

फायदा– पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र बढ़ेगा तथा छोटे कार्यकर्ताओं में अधिक प्रसन्नता होगी।

घाटा– दल के भीतर गुटबाजी को बढ़ावा मिलेगा। प्रायः हर मामले में बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक खेमा सामने आए।

(स) हरेक मामले पर गुप्त मतदान कराना।

फायदा– यह पद्धति अधिक लोकतांत्रिक और निष्पक्ष है। पार्टी के मतभेदों को दूर करने के लिए गुप्त मतदान प्रक्रिया अपनाने से प्रत्येक सदस्य अपनी बात स्वतंत्रतापूर्वक रख सकेगा।

घाटा– राजनीतिक पार्टी के अध्यक्ष के व्हिप जारी करने के बावजूद आशानुरूप परिणाम कई बार नहीं मिलते। इससे वोटिंग का खतरा बना रहता है।

(द) पार्टी के वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं से सलाह करना।

फायदा–कम आयु के नेताओं को अनुभवी तथा परिपक्व लोगों का मार्गदर्शन मिलेगा। नई पीढ़ी को इसका लाभ मिलेगा।

घाटा– पार्टी में केवल वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं का वर्चस्व कायम होगा तथा नायक पूजा को बढ़ावा मिलेगा।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किसे/किन्हें 1967 के चुनावों में कांग्रेस की हार के कारण के रूप में स्वीकार कि जा सकता है? अपने उत्तर की पुष्टि में तर्क दीजिए।

(अ) कांग्रेस पार्टी में करिश्माई नेता का अभाव ।

(ब) कांग्रेस पार्टी के भीतर टूट।

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria

(स) क्षेत्रीय, जातीय और सांप्रदायिक समूहों की लामबंदी को बढ़ाना।

(द) गैर–कांग्रेसी दलों के बीच एकजुटता।

(इ) कांग्रेस पार्टी के अन्दर मतभेद।

उत्तर– (अ) इस कारण को कांग्रेस की हार के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि कांग्रेस में अनेक ऐसे में थे जो वरिष्ठ, अनुभवी और करिश्माई थे।

(ब) यह कांग्रेस की पार्टी की हार का सबसे बड़ा कारण था, क्योंकि कांग्रेस अब गुटों में बँटती जा रही थी। सिंडिके का कांग्रेस के संगठन पर अधिकार था तो इंडिकेट या इंदिरा गांधी के समर्थकों में व्यक्तिगत वफादारी और कुछ कर दिखाने चाहत के कारण मतभेद बढ़ते जा रहे थे। एक गुट पूँजीवाद, उदारवाद, व्यक्तिवाद को अधिक चाहता था तो दूसरा गुट ढंग के समाजवाद, राष्ट्रीयकरण, देशी राजाओं की विरोधी नीतियों की आलोचना करता था।

(स) सन् 1967 में आम चुनावों में पंजाब में अकाली दल, तमिलनाडु में डी. एम. के. जैसे दलों के उदय से अनेक रा में क्षेत्रीय, जातीय और सांप्रदायिक लामबंदी को प्रोत्साहन मिलने के कारण कांग्रेस को गहरा धक्का पहुँचा। वह केन्द्र में स बहुमत प्राप्त न कर सकी और कई राज्यों में उसे सत्ता से हाथ धोना पड़ा।

(द) गैर–कांग्रेसी दलों के बीच पूर्णरूप से एकजुटता नहीं थी लेकिन जिन–जिन प्रांतों में ऐसा हुआ वहाँ वामपंथियों अथवा गैर–कांग्रेसी दलों को लाभ प्राप्त हुआ।

(इ) कांग्रेस के अंदर होने वाले मतभेदों के कारण बहुत जल्दी ही आंतरिक फूट कालांतर में सभी के समक्ष आ गई तथा लोग यह मानने लगे कि सन् 1967 के चुनाव में कांग्रेस की हार के कई कारणों में से यह भी एक महत्त्वपूर्ण कारण था।

प्रश्न 7. सन् 1970 के दशक में इंदिरा गांधी की सरकार किन कारणों से लोकप्रिय हुई थी?

उत्तर– सन् 1970 के दशक में इंदिरा गांधी की सरकार के लोकप्रिय होने के कारण निम्नलिखित थे–

(1) करिश्मावादी नेता– सन् 1970 के दशक में कांग्रेस को इंदिरा गांधी के रूप में एक करिश्माई नेता मिल गया। वह प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू की पुत्री थीं तथा उन्होंने स्वयं को गांधी–नेहरू परिवार का वास्तविक राजनीतिक उत्तराधिकारी बताने के साथ–साथ अधिक प्रगतिशील कार्यक्रम, जैसे– बीस सूत्री कार्यक्रम, गरीबी हटाने के लिए बैंकों के राष्ट्रीयकरण का वादा तथा कल्याणकारी सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम की घोषणा की। वह देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री होने के कारण महिला मतदाताओं में अधिक लोकप्रिय हुई।

(2) प्रगतिशील कार्यक्रमों की घोषणा– इंदिरा गांधी द्वारा 20 सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत करना, बैंकों का राष्ट्रीयकरण करना, प्रिवीपर्स को समाप्त करना, श्री वी.वी. गिरि जैसे मजदूर नेता को दल के घोषित प्रत्याशी के विरुद्ध राष्ट्रपति का चुनाव जिताकर लाना, इन सभी ने इंदिरा गांधी और उनकी सरकार को लोकप्रिय बनाया। सन्

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

1971 में भारत–पाकिस्तान युद्ध में इंदिरा गांधी की कूटनीति ने बांग्लादेश का निर्माण कराया और पाकिस्तान को हराया। इससे भी इंदिरा गांधी की लोकप्रियता बढ़ी।

(3) कुशल एवं साहसिक चुनावी रणनीति– इंदिरा गांधी ने दो चुनौतियों का सामना किया। उन्हें 'सिंडिकेट' के प्रभाव से स्वतंत्र अपना मुकाम स्थापित करने की आवश्यकता थी। कांग्रेस ने सन् 1967 के चुनाव में जो जमीन खोई थी उसे भी उन्हें हासिल करना था। इंदिरा गांधी ने बड़ी साहसिक रणनीति अपनाई। उन्होंने एक साधारण से सत्ता संघर्ष को विचारधारात्मक संघर्ष में बदल दिया। उन्होंने सरकार की नीतियों को वामपंथी रंग देने के लिए कई कदम उठाए।

(4) भूमि सुधार कानूनों का क्रियान्वयन– इसी दौर में इंदिरा गांधी ने भूमि सुधार के मौजूदा कानूनों के क्रियान्वयन के लिए जबरदस्त अभियान चलाया। उन्होंने भू–परिसीमन के कुछ और कानून भी बनवाए। दूसरे राजनीतिक दलों पर अपनी निर्भरता समाप्त करने, संसद में अपनी पार्टी की स्थिति मजबूत करने और अपने कार्यक्रमों के पक्ष में जनादेश हासिल करने हेतु दिसम्बर 1970 में लोकसभा भंग करने की सिफारिश की।

प्रश्न 8. सन् 1960 के दशक की कांग्रेस पार्टी के संदर्भ में 'सिंडिकेट' का क्या अर्थ है? सिंडिकेट ने कांग्रेस पार्टी में क्या भूमिका निभाई?

उत्तर– कांग्रेस पार्टी के संदर्भ में 'सिंडिकेट' का अर्थ– कांग्रेसी नेताओं के एक समूह को अनौपचारिक तौर पर 'सिंडिकेट' के नाम से पुकारा जाता था। 'सिंडिकेट' कांग्रेस के भीतर ताकतवर और प्रभावशाली नेताओं का एक समूह था। इस समूह के नेताओं का पार्टी के संगठन पर नियंत्रण था 'सिंडिकेट' के नेतृत्वकर्ता मद्रास प्रांत के भूतपूर्व मुख्यमंत्री और फिर कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रह चुके के. कामराज थे। लाल बहादुर शास्त्री और उसके बाद इंदिरा गांधी दोनों ही सिंडिकेट की सहायता से प्रधानमंत्री के पद पर आरूढ़ हुए थे।

भूमिका– इंदिरा गांधी के पहले मंत्रिपरिषद् में सिंडिकेट की निर्णायक भूमिका रही। इसने तत्कालीन समय की नीतियों के निर्माण व क्रियान्वयन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कांग्रेस के विभाजित होने के पश्चात् सिंडिकेट के नेताओं और उनके प्रति निष्ठावान कांग्रेसी कांग्रेस(ओ) में ही रहे। चूँकि इन्दिरा गाँधी की कांग्रेस(आर) ही लोकप्रियता की कसौटी पर सफल रही, अतः भारतीय राजनीति के ये बड़े और ताकतवर नेता सन् 1971 के बाद प्रभावहीन हो गए।

प्रश्न 9. कांग्रेस पार्टी किन मसलों को लेकर 1969 में टूट का शिकार हुई?
अथवा
सन् 1969 ई० में कांग्रेस पार्टी में विभाजन क्यों हुआ? कारण दीजिए।

उत्तर– कांग्रेस पार्टी के सन् 1969 में टूट के कारण–कांग्रेस पार्टी में सन् 1969 में निम्नलिखित मसलों को लेकर टूट हुई–

(1) 1969 में इंदिरा गांधी की असहमति के बावजूद सिंडिकेट ने तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष एन. संजीव रेड्डी को कांग्रेस पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में खड़ा किया। ऐसे में इंदिरा गांधी ने तत्कालीन उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरि को बढ़ावा दिया कि वे एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में राष्ट्रपति पद के लिए अपना

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria

नामांकन भरें। यह कांग्रेस पार्टी में फूट का प्रमुख कारण था।

(2) इंदिरा गांधी ने 14 अग्रणी बैंकों का राष्ट्रीयकरण तथा भूतपूर्व राजा–महाराजाओं को प्राप्त विशेषाधिकार यानी प्रिवीपर्स को समाप्त करने जैसी कुछ बड़ी और जनप्रिय नीतियों की घोषणा की। उस समय मोरारजी देसाई देश के उपप्रधानमंत्री तथा वित्तमंत्री थे। उपर्युक्त दोनों मसलों पर प्रधानमंत्री और उनके बीच गहरे मतभेद उभरे तथा इसके परिणामस्वरूप मोरारजी देसाई ने सरकार से त्यागपत्र दे दिया।

(3) पूर्व में भी कांग्रेस के भीतर इस तरह के मतभेद उठ चुके थे, परन्तु इस बार मामला कुछ अलग ही था। दोनों गुट चाहते थे कि राष्ट्रपति के चुनाव में शक्ति को आजमा ही लिया जाए। आखिरकार राष्ट्रपति पद के चुनाव में वी.वी. गिरि ही विजयी हुए। कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार की हार से पार्टी का टूटना तय हो गया। कांग्रेस अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी को अपनी पार्टी से निष्कासित कर दिया। इस प्रकार कांग्रेस, पुरानी कांग्रेस और नई कांग्रेस में विभाजित हो गई। इंदिरा गांधी ने पार्टी की इस टूट को विचारधाराओं की लड़ाई के रूप में पेश किया।

प्रश्न 10. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़े और इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें–

''इंदिरा गांधी ने कांग्रेस को अत्यंत केंद्रीकृत और अलोकतांत्रिक पार्टी संगठन में तब्दील कर दिया, जबकि नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस शुरुआती दशकों में एक संघीय लोकतांत्रिक और विचारधाराओं के समाहार का मंच थी। नयी और लोकलुभावन राजनीति ने राजनीतिक विचारधारा को महज चुनावी विमर्श में बदल दिया। कई नारे उछाले गए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उसी के अनुकूल सरकार की नीतियाँ भी बनानी थीं, 1970 के दशक के शुरुआती सालों में अपनी बड़ी चुनावी जीत के जश्न के बीच कांग्रेस एक राजनीतिक संगठन के तौर पर मर गई।'' –सुदीप्त कविराज

(अ) लेखक के अनुसार नेहरू और इंदिरा गाँधी द्वारा अपनाई गई रणनीतियों में क्या अंतर था ?

(ब) लेखक ने क्यों कहा है कि सत्तर के दशक में कांग्रेस मर गई ?

(स) कांग्रेस पार्टी में आए बदलावों का असर दूसरी पार्टियों पर किस तरह पड़ा?

उत्तर–

(अ) पं. जवाहर लाल नेहरू की तुलना में उनकी पुत्री तथा तीसरी प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने कांग्रेस पार्टी को बहुत अधिक केन्द्रीकृत व अलोकतांत्रिक पार्टी संगठन के रूप में बदल दिया। नेहरू के काल में यह पार्टी संघीय, लोकतांत्रिक तथा विभिन्न विचारधाराओं को मानने वाले कांग्रेसी नेताओं तथा यहाँ तक कि विरोधियों को साथ लेकर चलने वाले एक मंच के रूप में जानी जाती थी।

(ब) लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि उस समय कांग्रेस की सर्वोच्च नेता अधिनायकवादी व्यवहार कर रही थीं। उन्होंने कांग्रेस की सभी शक्तियाँ अपने या कुछ गिनती के अपने कट्टर समर्थकों तक केन्द्रीकृत की। मनमाने ढंग से मंत्रिमंडल तथा दल का गठन किया। पार्टी में विचार–विमर्श का दौर समाप्त हो गया। व्यावहारिक रूप में विरोधियों को कुचला गया। सन् 1975 में आपातकाल की घोषणा की गई। जबरदस्ती नसबंदी कार्यक्रम चलाए गए। अनेक राष्ट्रीय व लोकप्रिय नेताओं को जेल में डाल दिया गया।

(स) कांग्रेस पार्टी में आए बदलाव के कारण दूसरी पार्टियों में आपस में एकता बढ़ी। उन्होंने गैर–कांग्रेसी और

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

गैर–साम्यवादी संगठन बनाए। जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति को समर्थन दिया। जिन लोगों को जेल में डाल दिया गया था, उनके परिव को गुप्त सहायता दी गई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की लोकप्रियता बढ़ी। कांग्रेस से अनेक सम्प्रदायों के समूह दूर होते गए वे जनता पार्टी के रूप में लोगों के समक्ष आए। सन् 1977 के चुनाव में विरोधी दलों ने कांग्रेस का सफाया कर दिया।

प्रश्न 11. सन् 1960 के दशक में कांग्रेस प्रणाली को पहली बार चुनौती क्यों मिली?

उत्तर– राजनीतिक प्रतिस्पर्धा गहन हो चली थी तथा ऐसे में कांग्रेस को अपना प्रभुत्व बरकरार रखने में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। विपक्ष अब पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली था। कांग्रेस को इस विपक्ष की चुनौती का सामना करना पड़ा। कांग्रेस को अंदरूनी चुनौतियों को भी झेलना पड़ा। क्योंकि अब यह पार्टी अपने अंदर की विभिन्नता के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पा रही थी। इसलिए कांग्रेस प्रणाली को सन् 1960 के दशक में पहली बार चुनौती मिली।

प्रश्न 12. सन् 1966 में कांग्रेस दल के वरिष्ठ नेताओं ने प्रधानमंत्री के पद के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी का साथ क्यों दिया?

अथवा

सन् 1966 में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने इंदिरा गाँधी को भारत के प्रधानमंत्री के लिए क्यों समर्थन दिया?

उत्तर– कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने संभवतः यह सोचकर उनका समर्थन किया कि प्रशासनिक तथा राजनैतिक मामलों में विशेष अनुभव नहीं होने के कारण समर्थन तथा दिशा–निर्देशन के लिए इंदिरा गांधी उन पर निर्भर रहेंगी। अतः सन् 1966 में कांग्रेस दल के वरिष्ठ नेताओं ने प्रधानमंत्री के पद के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी का साथ दिया।

प्रश्न 13. भारत में सन् 1967 के आम चुनावों के परिणामों को 'राजनीतिक भूचाल' की संज्ञा क्यों दी गयी?

उत्तर – सन् 1967 के चुनावी परिणामों ने कांग्रेस को राष्ट्रीय तथा प्रांतीय स्तर पर जोरदार झटका दिया था। उसके मत प्रतिशत और सीटों में भारी गिरावट दर्ज की गयी। अब से पहले कांग्रेस को कभी न तो इतने कम वोट मिले थे और न ही इतनी कम सीटें मिली थीं। इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल के आधे मंत्री चुनाव हार गए थे। तत्कालीन अनेक राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने चुनाव परिणामों को 'राजनीतिक भूचाल' या 'राजनीतिक भूकंप' की संज्ञा दी।

प्रश्न 14. 1967 के चौथे आम चुनाव में कांग्रेस दल की मुख्य चुनौतियाँ बताइए–

उत्तर– मुख्य चुनौतियाँ निम्नलिखित थीं–

(1) दो प्रधानमंत्रियों का देहान्त तथा इंदिरा गाँधी का राजनीति के दृष्टिकोण से कम अनुभवी होना।

(2) इस समय देश आर्थिक संकट में था। मानसून की असफला से खेती में गिरावट, विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आई।

(3) साम्यवादी और समाजवादी पार्टी ने व्यापक समानता के लिए संघर्ष छेड़ दिया।

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

प्रश्न 15. सन् 1967 के आम चुनावों के पश्चात् इंदिरा गाँधी ने किन दो चुनौतियों का सामना किया?

उत्तर– सन् 1967 के आम चुनाव के पश्चात् इंदिरा गाँधी को निम्न दो चुनौतियों का सामना करना पड़ा–

(1) कॉग्रेस के भीतर ताकतवर व शक्तिशाली नेताओं के समूह सिंडिकेट के प्रभाव से अपने आपको मुक्त रखना।

(2) सन् 1967 के आम चुनावों में खोई अपनी पार्टी की साख को पुनः प्राप्त करना ।

प्रश्न 16. दल–बदल का क्या अर्थ है?

उत्तर– जब कोई जन प्रतिनिधि किसी विशेष राजनैतिक पार्टी का चुनाव चिह्न लेकर चुनाव लड़े तथा वह चुनाव जीत जाए और अपने स्वार्थ के लिए अथवा किसी अन्य कारण से अपने दल को छोड़कर किसी अन्य दल में सम्मिलित हो जाए तो इसे दल–बदल कहा जाता है।

प्रश्न 17. भारतीय राजनीति पर दल–बदल की भूमिका का आकलन कीजिए।

उत्तर– दल–बदल उन प्रतिनिधि को संदर्भित करता है जो पार्टी को छोड़ देते हैं जिससे वे चुने गये थे तथा अन्य दल में शामिल हो जाते हैं। यह संस्कृति भारत में 1967 के चुनावों के बाद विकसित हुई।

– बार–बार सरकार बनाने व सरकार भंग करने जैसी स्थिति।

– इस अवधि को 'आया राम, गया राम' की अभिव्यक्ति दी गई।

प्रश्न 18.

(अ) 'आया राम–गया राम' किस वर्ष से संबंधित घटना थी?

(ब) 'आया राम–गया राम' संबंधित टिप्पणी किस व्यक्ति के संबंध में की गई ?

उत्तर–

(अ) 'आया राम–गया राम' सन् 1967 से संबंधित घटना थी।

(ब) 'आया राम–गया राम' नामक टिप्पणी कांग्रेस के हरियाणा राज्य के एक विधायक से संबंधित है, जो सन् 1967 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी के टिकट पर विधायक बना था। उसने एक पखवाड़े में तीन बार दल बदल–बदल कर दल बदलने का एक कीर्तिमान बनाया था।

प्रश्न 19. 'प्रिवीपर्स' की समाप्ति क्यों की गई? क्या यह उचित था? तकपूर्ण उत्तर दीजिए।

अथवा

'प्रिवीपर्स' का क्या अर्थ है? सन् 1970 में इंदिरा गांधी उसे क्यों समाप्त कर देना चाहती थी?

अथवा

'प्रिवीपर्स' से आप क्या समझते हैं? इस व्यवस्था की समाप्ति के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– प्रिवीपर्स का अर्थ– देशी रियासतों का विलय भारतीय संघ में करने से पूर्व सरकार ने यह आश्वासन दिया था कि रियासतों के तत्कालीन शासक परिवार को निश्चित मात्रा में निजी संपदा रखने का अधिकार होगा। साथ ही सरकार की ओर से उन्हें कुछ भत्ते भी दिए जाएंगे। ये दोनों (शासक की निजी संपदा और भत्ते) इस बात को आधार मानकर तय की जाएँगी कि जिस राज्य का विलय किया जाना है उसका विस्तार तथा राजस्व क्षमता कितनी है। इस व्यवस्था को 'प्रिवीपर्स' कहा गया। ये वंशानुगत विशेषाधिकार भारतीय संविधान में वर्णित समानता तथा सामाजिक–आर्थिक न्याय के सिद्धान्तों से मेल नहीं खाते थे। नेहरू ने कई बार इस

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria

व्यवस्था को लेकर असंतोष जताया था।

प्रिवीपर्सो की समाप्ति के विभिन्न प्रयास– सन् 1967 के आम चुनावों के बाद इंदिरा गांधी ने प्रिवीपर्स को खत्म करने की माँग का समर्थन किया। उनकी राय थी कि सरकार को प्रिवीपर्स की व्यवस्था समाप्त कर देनी चाहिए। मोरारजी देसाई प्रिवीपर्स की समाप्ति को नैतिक रूप से गलत मानते थे। प्रिवीपर्स की व्यवस्था को समाप्त करने के लिए सरकार ने सन् 1970 में संविधान संशोधन के प्रयास किए, परन्तु राज्यसभा में यह मंजूरी नहीं पा सका। इसके बाद सरकार ने एक अध्यादेश जारी किया, परन्तु इसे सर्वोच्च न्यायालय ने निरस्त कर दिया। इंदिरा गांधी ने इसे सन् 1971 के चुनावों में एक बड़ा मुद्दा बनाया तथा इस मुद्दे पर उन्हें पर्याप्त जन–समर्थन भी प्राप्त हुआ। सन् 1971 में मिली भारी विजय के पश्चात् संविधान संशोधन हुआ तथा इस प्रकार प्रिवीपर्स की समाप्ति के मार्ग में मौजूद कानूनी अड़चनें समाप्त हो गईं।

प्रश्न 20. निम्नांकित घर टिप्पणी लिखिए–

(1) इंदिरा गाँधी बनाम सिंडिकेट

(2) दल–बदल

उत्तर– (1) इंदिरा गाँधी बनाम सिंडिकेट– 1960 के दशक में कांग्रेसी नेताओं के एक समूह को अनौपचारिक तौर पर सिंडिकेट के नाम से पुकारा जाता था। सिंडिकेट कांग्रेस के भीतर ताकतवर और प्रभावशाली नेताओं का एक समूह था। इस समूह के नेताओं का पार्टी के संगठन पर नियंत्रण था इंदिरा गाँधी इसी सिंडिकेट की सहायता से प्रधानमंत्री बनी थीं। सिंडिकेट के नेताओं को उम्मीद थी कि इंदिरा गाँधी उनकी सलाहों का अनुसरण करेंगी। प्रारम्भ में इंदिरा गाँधी ने सिंडिकेट को महत्व प्रदान किया। लेकिन शीघ्र ही इंदिरा गाँधी ने सरकार और पार्टी के भीतर स्वयं को स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अपने सलाहकारों और विश्वस्तों के समूह में पार्टी से बाहर के लोगों को रखा। धीरे–धीरे और बड़ी सावधानी से इंदिरा गाँधी ने सिंडिकेट को किनारे पर ला खड़ा किया। सिंडिकेट 1971 के बाद प्रभावहीन हो गयी।

(2) दल बदल – कोई जनप्रतिनिधि किसी विशेष दल के चुनाव चिह्न को लेकर चुनाव लड़े और जीत जाए तथा चुनाव जीतने के बाद इस दल को छोड़कर किसी दूसरे दल में शामिल हो जाए तो इसे दल–बदल कहते हैं। इसकी शुरुआत 1967 के आम चुनावों से मानी जाती है। दल–बदल ने सरकारों के बनने–बिगड़ने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौर में राजनीतिक निष्ठा थी। इस अदल–बदल से आया राम–गया राम का जुमला प्रसिद्ध हुआ। वर्ष 1985 में 52वें संविधान संशोधन के माध्यम से देश में दल–बदल विरोधी कानून पारित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय राजनीति में 'दल–बदल' की कुप्रथा को समाप्त करना था, जो कि 1970 के दशक से पूर्व भारतीय राजनीति में काफी प्रचलित थी।

प्रश्न 21. 1971 के चुनाव के बाद किन कारणों से काँग्रेस की पुनर्स्थापना हुई।

अथवा

1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की पुनर्स्थापना के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

1971 में कांग्रेस की पुनर्स्थापना के कारण बताइए।

उत्तर– 1971 के लोकसभा चुनाव के बाद निम्नलिखित कारणों से कांग्रेस की पुनर्स्थापना हुई–

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria

(1) इंदिरा गाँधी का चमत्कारिक नेतृत्व – 1971 के चुनावों में कांग्रेस के पीछे इंदिरा गाँधी का चमत्कारी नेतृत्व था। उन्होंने मतदाताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क किया तथा कांग्रेस को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

(2) गरीबी हटाओ का नारा– गरीबी हटाओ के नारे से इंदिरा गाँधी ने आधार तैयार किया।

(3) इंदिरा गाँधी की राजनीतिक हैसियत का अप्रत्याशित रूप से बढ़ना– 1971 के चुनाव में विजय के उपरान्त भारतीय राजनीति में इंदिरा गाँधी की अप्रत्याशित रूप सजनीतिक हैसियत बढ़ गयी।

(4) समाजवादी नीतियाँ– इन्दिरा गाँधी ने समाजवादी नीतियों को अपनाया। उन्होंने प्रत्येक चुनाव रैली में समाजवाद के विषय में बढ़–चढ़कर बातें कीं।

(5) कांग्रेस के पास एजेंडा एवं कार्यक्रम–1971 के चुनावों में कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी पार्टी थी जिसके पास देश के विकास हेतु एक निश्चित एजेंडा व कार्यक्रम था।

(6) कांग्रेस प्रणाली के भीतर हर तनाव एवं संघर्ष को पचा लेने की क्षमता थी।

प्रश्न 22. सन् 1971 के चुनावों के परिणामस्वरूप बदली हुई कांग्रेस व्यवस्था की प्रकृति कैसी थी?

उत्तर– सन् 1971 के चुनावों के परिणामस्वरूप बदली हुई कांग्रेस व्यवस्था की प्रकृति को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है–

(1) सन् 1971 के चुनाव के पश्चात् इंदिरा गाँधी ने कांग्रेस को अपने सर्वोच्च नेता पर निर्भर रहने वाली पार्टी बना दिया। यहाँ से उनके आदेश सर्वोपरि बनने प्रारम्भ हुए। सिंडिकेट जैसे अनौपचारिक प्रभावशाली नेताओं का समूह राजनीतिक मंच से हट गया।

(2) सन् 1971 के पश्चात् कांग्रेस का संगठन भिन्न–भिन्न विचारधाराओं वाले समूहों के समावेशी किस्म का नहीं रहा। अब यह अनन्य एकाधिकारिता वाला बन गया था।

(3) इंदिरा की कांग्रेस को गरीबों, महिलाओं, दलित समूहों, जनजाति समूहों के लोगों ने जिताया था। यह धनी उद्योगपतियों, सौदागरों तथा राजनीतिज्ञों के समूह अथवा सिंडिकेट के हाथों की कठपुतली अब नहीं रही। वस्तुतः यह पहले की कांग्रेस पार्टी का पूर्णरूप से बदला हुआ स्वरूप था।

Class – 12th NCERT राजनीति विज्ञान के प्रत्येक अध्याय को अच्छे से समझने के लिए सिद्धि विनायक संगरिया यू–ट्यूब चैनल पर आप वीडियो देखें। इसके लिए आपको चैनल की प्ले–लिस्ट NCERT POL SCIENCE|2021-22|Class 12 (https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU) में अध्यायवार सभी वीडियो एकसाथ मिलेंगे। आप भी पढ़ें और अपने साथियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद

सिद्धि विनायक संगरिया टीम

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria